(١٧) الجزء السابع عشر

اٰيَاتُهَا ١١٢ (٢١) سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ (٧٣) رُكُوْعَاتُهَا ٧

उस में ११२ आयतें हैं सूरह अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ①

इन्सानों के लिए उन के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया, और वो ग़फलत में पड़े ऐराज़ कर रहे हैं।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

उन के पास उन के रब की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उधर कान लगाते हैं

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ② لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ

इस हाल में के वो खेल रहे होते हैं। उन के दिल ग़ाफिल होते हैं। और वो ज़ालिम चुपके चुपके

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ

सरगोशी करते हैं के ये नबी नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान है। क्या फिर तुम जादू के पास

السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ③ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जाते हो इस हाल में के तुम आँखों से देख रहे हो? नबी ने कहा के मेरा रब जानता है हर बात

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ④

जो आसमान में और ज़मीन में है। और वो सुनने वाला है, जानने वाला है।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ

बल्के उन्हों ने कहा के ये तो परेशान ख़यालात हैं, बल्के ये क़ुरआन इस नबी ने घड़ लिया है, बल्के वो तो

شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ⑤

शाइर है। इस लिए उसे चाहिए के हमारे पास मोअजिज़ा ले आए जैसा पेहले पैग़म्बर मोअजिज़ा दे कर भेजे गए थे।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

उन से पेहले कोई बस्ती ईमान नहीं लाई जिसे हम ने हलाक किया है। क्या फिर ये ईमान लाएंगे?

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्दों को जिन की तरफ हम वही करते थे,

فَسْــَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ⑦

इस लिए तुम एहले किताब से पूछो अगर तुम जानते नहीं हो।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ
और हम ने उन अमबिया को ऐसा जिस्म नहीं बनाया के वो खाना न खाते हों

وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ
और न वो हमेशा रेहने वाले थे। फिर हम ने उन से वादा सच कर दिखाया, फिर हम ने उन को

وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ
और जिन को हम ने चाहा नजात दी और ज़्यादती करने वालों को हम ने हलाक किया। यक़ीनन हम ने तुम्हारी

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ ع
तरफ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारी नसीहत है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और कितनी

قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا
बस्तियाँ हम ने तबाह कीं जो ज़ालिम थीं और हम ने उन के बाद

بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ
दूसरी क़ौमों को पैदा किया। फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब महसूस किया

اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ؕ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى
तो फ़ौरन वहाँ से वो भागने लगे। (तो हम ने कहा के) भागो मत, बल्के वापस जाओ उधर जिस में

مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا
तुम ऐश कर रहे थे और अपने मकानात में, शायद तुम्हारी पूछ हो। वो केहने लगे

يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ
हाए हमारी कमबख़्ती! यक़ीनन हम ही कुसूरवार थे। फिर यही उन की

دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥
पुकार रही यहां तक के हम ने उन को कटा हुवा, बुझा हुवा बना दिया। और हम ने

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝١٦
आसमान और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं खेल करते हुए पैदा नहीं किया।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖۗ
अगर हम चाहते के दिल बेहलाने के लिए कुछ बनाएं तो हमारे पास की चीज़ों (मलाइका, हूर) में से बनाते (न मसीह

اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝١٧ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى
व मरयम को), अगर हमें ऐसा करना होता। बल्के हम हक़ को बातिल पर दे

الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
मारते हैं, फिर हक़ बातिल का सर कुचल देता है, फिर वो फौरन मिट जाता है। और तुम पर अफ़सोस है
مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝١٨ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
उन बातों से जो तुम बयान करते हो। और अल्लाह ही का है वो सब जो आसमान व ज़मीन में है।
وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
और वो फरिशते जो उस के पास हैं, वो अल्लाह की इबादत से तकब्बुर नहीं करते
وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝١٩ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
और न वो थकते हैं। वो तस्बीह़ करते रेहते हैं रात और दिन,
لَا يَفْتُرُوْنَ ۝٢٠ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ
सुस्ती नहीं करते। क्या उन्हों ने माबूद बना लिए हैं ज़मीन से
هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝٢١ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ
जो मुर्दा ज़िन्दा कर सकते हैं? अगर ज़मीन व आसमान में कई माबूद होते अल्लाह के सिवा
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
तो ज़मीन व आसमान ज़रूर तबाह हो जाते। फिर पाक है अल्लाह, जो अर्श का रब है, उन बातों से जो वो
عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٢٢ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝٢٣
केह रहे हैं। उस से सवाल नहीं किया जा सकता उन बातों के मुतअल्लिक़ जो वो करता है, बल्के उन से सवाल
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ
किया जाएगा। क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा माबूद बना लिए हैं? आप फरमा दीजिए के तुम दलील लाओ।
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
ये उन की किताब है जो मेरे साथ हैं और ये उन की किताब है जो मुझ से पेहले थे। बल्के उन में से अक्सर
لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٤ وَمَآ اَرْسَلْنَا
हक़ को जानते नहीं, फिर वो उस से ऐराज़ कर रहे हैं। और हम ने
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ
आप से पेहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उस की तरफ वही करते थे इस बात की के मेरे सिवा कोई
لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝٢٥ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ
माबूद नहीं, तो तुम मेरी ही इबादत करो। और उन्हों ने कहा के रहमान तआला ने औलाद

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ۙ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ

बनाई है, अल्लाह इस से पाक है। बल्के वो मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। वो किसी बात में अल्लाह से सबक़त

بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ

नहीं कर सकते, बल्के वो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ काम करते हैं। अल्लाह जानता है जो

مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ

उन के आगे और पीछे है और वो सिफ़ारिश नहीं करते मगर

اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ

उस की जो अल्लाह का पसन्दीदा हो और वो अल्लाह के खौफ से सेहमे रेहते हैं। और जो भी

يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ

उन में से ये कहेगा के मैं माबूद हूँ अल्लाह के सिवा तो उस को हम जहन्नम की

جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ؑ اَوَلَمْ يَرَ ع ٣ ١٩ ٢

सज़ा देंगे। इसी तरह ज़ालिमों को हम सज़ा देते हैं। क्या काफिरों

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا

ने देखा नहीं के आसमान और ज़मीन दोनों

رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ

मिले हुए थे, फ़िर हम ने उन दोनों को अलग किया। और हम ने पानी से हर ज़िन्दा चीज़ को

حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِيَ

बनाया। क्या फिर ये ईमान नहीं लाते? और हम ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए

اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ص وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا

के कहीं वो उन को ले कर न हिले। और हम ने ज़मीन में कुशादा रास्ते बना दिए

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا

ताके वो राह पाएं। और हम ने आसमान को महफूज़

مَّحْفُوْظًا ۚ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

छत बनाया। और वो आसमान की निशानियों से ऐराज़ कर रहे हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

और वही अल्लाह है जिस ने रात और दिन पैदा किए और सूरज और चाँद पैदा किए।

كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ۝٣٣ وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ
सब के सब आसमान में तैर रहे हैं। और हम ने किसी इन्सान के लिए आप से

مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ‌ؕ اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ۝٣٤
पेहले हमेशा रेहना नहीं बनाया। क्या फिर अगर आप मर जाओगे तो ये हमेशा रेहने वाले हैं?

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ‌ؕ وَنَبۡلُوۡكُمۡ بِالشَّرِّ
हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है। और बुराई और भलाई के ज़रिए

وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً‌ ؕ وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ۝٣٥
हम तुम्हारी आज़माइश व इमतिहान लेते हैं। और हमारी ही तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّتَّخِذُوۡنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ
और जब काफिर लोग आप को देखते हैं तो आप ही को मज़ाक़ बना लेते हैं। के क्या ये वो आदमी

اَهٰذَا الَّذِىۡ يَذۡكُرُ اٰلِهَتَكُمۡ‌ۚ وَهُمۡ بِذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ
है जो तुम्हारे माबूदों का तज़किरा करता रेहता है? और वो खुद रहमान तआला की याद के

هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ۝٣٦ خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ عَجَلٍ‌ ؕ سَاُورِيۡكُمۡ
मुन्किर हैं। इन्सान जल्दबाज़ी की ख़सलत के साथ पैदा किया गया है। अनक़रीब मैं तुम्हें अपनी

اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ۝٣٧ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا
आयतें दिखलाऊँगा। फिर तुम मुझ से जल्दी का मुतालबा मत करो। और ये केहते हैं के ये

الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝٣٨ لَوۡ يَعۡلَمُ الَّذِيۡنَ
वादा कब है अगर तुम सच्चे हो? काश ये काफ़िर जानते

كَفَرُوۡا حِيۡنَ لَا يَكُفُّوۡنَ عَنۡ وُّجُوۡهِهِمُ النَّارَ
उस वक़्त को जब वो अपने चेहरों से आग रोक नहीं सकेंगे

وَلَا عَنۡ ظُهُوۡرِهِمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ۝٣٩ بَلۡ تَاۡتِيۡهِمۡ
और न अपनी पीठों से और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। बल्के वो उन के पास अचानक आ जाएगी,

بَغۡتَةً فَتَبۡهَتُهُمۡ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ رَدَّهَا وَلَا هُمۡ
फिर वो उन को मबहूत कर देगी, फिर वो उस को लौटाने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न

يُنۡظَرُوۡنَ ۝٤٠ وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ
उन्हें मुहलत दी जाएगी। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ इस्तिहज़ा

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا

किया गया, फिर उन में से इस्तिहज़ा करने वालों को उसी अज़ाब ने घेर लिया जिस का

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ

वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। आप फ़रमा दीजिए के कौन तुम्हारी हिफाज़त करता है रात में

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ

और दिन में रहमान तआला से। बल्के वो अपने रब की याद से

مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ

मुंह मोड़ते हैं। क्या उन के लिए माबूद हैं हमारे अलावा जो उन को हम से बचा सकेंगे? वो तो खुद अपने

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

आप की मदद करने की ताक़त नहीं रखते और उन को हम से बचाने वाला साथी मुयस्सर नहीं आ सकता।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ

बल्के हम ने उन्हें और उन के बाप दादा को मुतमत्तेअ किया यहां तक के उन की उमरें तवील हो गईं।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ

क्या फिर वो देखते नहीं के हम ज़मीन को उस के अतराफ से कम करते हुए आ रहे हैं?

اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ

क्या फिर ये ग़ालिब हो सकते हैं? आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ तुम्हें वही के ज़रिए डराता हूँ।

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

और बेहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें डराया जाए।

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ

और अगर तेरे रब के अज़ाब का कोई झौंका उन को छू ले तो ज़रूर कहेंगे

يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ

के हाए हमारी खराबी! यक़ीनन हम ही कुसूरवार थे। और मीज़ाने अद्ल (इन्साफ के

الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ

तराजू) हम क़ाइम करेंगे क़यामत के दिन, फिर किसी शख्स पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى

और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा तो हम उसे ले आएंगे। और हम

بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ

हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को दी हक़ और बातिल के दरमियान

وَ ضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ

फेसला करने वाली किताब और रोशनी वाली किताब और नसीहत दिलाने वाली किताब उन मुत्तक़ियों के लिए।

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और वो क़यामत से भी डरते हैं।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और ये मुबारक तज़किरा है जो हम ने उतारा है। क्या फिर तुम उस का इन्कार करते हो?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ

यक़ीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की हिदायत दी इस से पेहले और हम उन को खूब जानने

عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ

वाले थे। जब के उन्हों ने अपने अब्बा और अपनी क़ौम से फरमाया के ये क्या मूरतियाँ हैं

الَّتِيْۤ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا

जिन पर तुम जमे हुए हो? उन्हों ने कहा के हम ने अपने बाप दादा को उन की

لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ

इबादत करते हुए पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तुम और तुम्हारे बाप दादा

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ

भी गुमराही में थे। उन्हों ने कहा क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो

اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ

या तुम दिल्लगी कर रहे हो? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारा रब आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا

और ज़मीन का रब है, वो जिस ने उन को पैदा किया। और मैं उस

عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ

पर गवाहों में से हूँ। और अल्लाह की क़सम! ज़रूर मैं

اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ

तुम्हारे बूतों के लिए तदबीर करूंगा इस के बाद के तुम वापस चले जाओगे। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيۡرًا لَّهُمۡ لَعَلَّهُمۡ اِلَيۡهِ يَرۡجِعُوۡنَ ۝٥٨

ने उन को टुकड़े टुकड़े कर दिया, मगर उन में से बड़े को, शायद वो उस की तरफ़ रूजूअ करें।

قَالُوۡا مَنۡ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ۝٥٩

उन्हों ने कहा जिस ने ये हरकत की हमारे माबूदों के साथ यक़ीनन वो ज़ालिमों में से है।

قَالُوۡا سَمِعۡنَا فَتًى يَّذۡكُرُهُمۡ يُقَالُ لَهٗۤ اِبۡرٰهِيۡمُ ۝٦٠ قَالُوۡا

उन्हों ने कहा के हम ने सुना है के एक नौजवान उन की बातें करता है जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्हों ने कहा

فَاۡتُوۡا بِهٖ عَلٰۤى اَعۡيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَشۡهَدُوۡنَ ۝٦١

के उसे लोगों के सामने लाओ ताके सब लोग गवाह रहें।

قَالُوۡۤا ءَاَنۡتَ فَعَلۡتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبۡرٰهِيۡمُ ۝٦٢

उन्हों ने कहा के तू ने ये हरकत की है हमारे माबूदों के साथ, ऐ इब्राहीम?

قَالَ بَلۡ فَعَلَهٗ ۖۗ كَبِيۡرُهُمۡ هٰذَا فَسۡـَٔلُوۡهُمۡ اِنۡ كَانُوۡا

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के उन के इस बड़े ने ये हरकत की है, तो तुम उन से पूछो अगर ये

يَنۡطِقُوۡنَ ۝٦٣ فَرَجَعُوۡۤا اِلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ فَقَالُوۡۤا اِنَّكُمۡ

बोलते हों। फिर वो खुद अपने दिल में केहने लगे के यक़ीनन तुम

اَنۡتُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ۝٦٤ ثُمَّ نُكِسُوۡا عَلٰى رُءُوۡسِهِمۡ ۚ لَقَدۡ

खुद ही कुसूरवार हो। फिर उन्हों ने अपने सर झुका लिए के यक़ीनन

عَلِمۡتَ مَا هٰۤؤُلَاۤءِ يَنۡطِقُوۡنَ ۝٦٥ قَالَ اَفَتَعۡبُدُوۡنَ

तुम्हें मालूम है के ये तो बोल नहीं सकते। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के क्या तुम इबादत करते

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنۡفَعُكُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمۡ ۝٦٦

हो अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों की जो तुम्हें न कुछ नफ़ा दे सकती हैं और न ज़रर पहोंचा सकती हैं?

اُفٍّ لَّكُمۡ وَلِمَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ

अफ़सोस है तुम पर भी और उन माबूदों पर भी जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो।

اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝٦٧ قَالُوۡا حَرِّقُوۡهُ وَانۡصُرُوۡۤا اٰلِهَتَكُمۡ

क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं? उन्हों ने कहा के तुम इब्राहीम को जला दो और अपने माबूदों की मदद करो

اِنۡ كُنۡتُمۡ فٰعِلِيۡنَ ۝٦٨ قُلۡنَا يٰنَارُ كُوۡنِىۡ بَرۡدًا

अगर तुम्हें करना है। हम ने कहा के ऐ आग! तू इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا

के लिए ठंडी और सलामती वाली बन जा। और उन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ मक्र का इरादा किया

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَ لُوْطًا

तो हम ने उन्हें खसारा उठाने वाले बना दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और लूत (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَ وَهَبْنَا

उस ज़मीन की तरफ जिस में हम ने जहान वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا

को इसहाक़ अता किए और मज़ीद याकूब भी। और सब को हम ने नेक

صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

बनाया। और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे

وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ

और हम ने उन की तरफ वही की नेकी के काम के करने की और नमाज़ क़ाइम करने की

وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَ لُوْطًا

और ज़कात देने की। और वो सब हमारी इबादत करने वाले थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ

हम ने नुबूव्वत और इल्म दिया और हम ने उन्हें नजात दी उस बस्ती से जो

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

गन्दे काम करती थी। यक़ीनन वो बुरी नाफरमान क़ौम

ع ٥ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَ اَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

थी। और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी रहमत में दाखिल किया। यक़ीनन वो नेक लोगों में से थे।

وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ

और नूह (अलैहिस्सलाम) का (क़िस्सा सुनिए) जब के उन्हों ने पुकारा इस से पेहले, फिर हम ने उन की दुआ क़बूल की, फिर हम ने

وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَ نَصَرْنٰهُ

उन्हें और उन के मानने वालों को उस बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की

مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

नुसरत की उस क़ौम के खिलाफ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। यक़ीनन वो

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ

बुरी क़ौम थी, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। और दावूद और सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) को (याद कीजिए) जब के

اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ

वो दोनों फ़ैसला कर रहे थे खेती के बारे में जब के उस में एक क़ौम की बकरियाँ (भेड़) रात को

الْقَوْمِۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾ۙ فَفَهَّمْنٰهَا

चर गईं। और हम उन का फैसला देख रहे थे। फिर हम ने उस फ़ैसले की सुलैमान (अलैहिस्सलाम)

سُلَيْمٰنَۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ز وَّسَخَّرْنَا

को समझ दी। और हम ने सब को नुबूव्वत और इल्म दिया। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) के साथ

مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾

पहाड़ों और परिन्दों को ताबेअ किया था जो तस्बीह पढ़ते थे। और हम ही करने वाले थे।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ

और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़िरह बनाना सिखाया तुम्हारे लिए ताके वो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी

مِّنْۢ بَاْسِكُمْۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ

हिफाज़त करे। क्या फिर तुम शुक्र अदा करते हो? और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए

الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ

तेज़ हवा को ताबेअ किया जो चलती थी उन के हुक्म से उस ज़मीन की तरफ जिस में

بٰرَكْنَا فِيْهَاؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾

हम ने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज़ जानते हैं।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

और शयातीन में से वो भी थे जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए ग़ोता लगाते थे और उस के अलावा दूसरे

دُوْنَ ذٰلِكَۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾ۙ وَاَيُّوْبَ

काम भी करते थे। और हम ही उन को संभाल रहे थे। और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्हों ने

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ

अपने रब को पुकारा के मुझे तकलीफ़ पहोंची है और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम

الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾ۚۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

करने वाला है। फिर हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और हम ने दूर कर दी वो तकलीफ जो उन्हें

ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً

थी और हम ने उन्हें दे दी उन की औलाद और उन के साथ उन के मानिन्द और भी दिए रहमत के तौर पर

مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ

हमारी तरफ़ से और यादगार इबादत करने वालों के लिए। और

وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

और इदरीस और ज़ुल किफ्ल (अलैहिमुस्सलाम) को। ये तमाम सब्र करने वालों में से थे।

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाखिल किया। यक़ीनन वो सुलहा में से थे।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ

और मछली वाले पैग़म्बर (यूनुस अलैहिस्सलाम) को जब के वो गुस्सा हो कर चले गए, तो उन्हों ने समझा के

لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ

हम उन पर गिरिफ़्त हरगिज़ नहीं करेंगे, फिर उन्हों ने दुआ की तारीकियों में के कोई माबूद नहीं

اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

मगर तू ही, तू पाक है। यक़ीनन मैं कुसूरवारों में से हूँ।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ

तो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और हम ने उन्हें ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम

نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

ईमान वालों को नजात देते हैं। और ज़करीया (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्हों ने अपने रब को पुकारा

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

ऐ मेरे रब! तू मुझे तन्हा मत छोड़ और तू बेहतरीन वारिस है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا

तो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की। और हम ने उन्हें यहया अता किए और हम ने उन के लिए उन की बीवी को

لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

अच्छा कर दिया। यक़ीनन वो सबक़त करते थे नेकियों में

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

और हमें शौक़ और डर से पुकारते थे। और वो हम से डरने वाले थे।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا
और उस मरयम को जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की, तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी
وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ
और हम ने उन्हें और उन के बेटे को जहान वालों के लिए मोअजिज़ा बनाया। यक़ीनन ये
اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾
तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है। और मैं तुम्हारा माबूद हूँ, तो तुम मेरी इबादत करो।
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع ٦
और उन के मुआमले में आपस में वो मुख्तलिफ गिरोह हो गए। सब को हमारी तरफ़ लौट कर आना है।
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ
फिर जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उस की कोशिश की नाक़दरी
لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ
नहीं की जाएगी। यक़ीनन हम उस को लिख रहे हैं। और जिस बस्ती (वालों) को भी हम ने हलाक किया
اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ
नामुमकिन है के वो लौट कर हमारे पास न आएं। यहां तक के जब याजूज और
يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾
माजूज खोल दिए जाएंगे और वो हर ढलवान जगह से तेज़ी से सरक रहे होंगे।
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
और सच्चा वादा क़रीब आ जाएगा, तो एक दम उन की निगाहें फटी रेह
اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا
जाएंगी जिन्हों ने कुफ्र किया। (वो कहेंगे) हाए हमारी कमबख्ती! यक़ीनन हम
فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ
ग़फ़लत में पड़े रहे इस से, बल्के हम मुजरिम थे। यक़ीनन तुम
وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا
और वो जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो सब जहन्नम का ईंधन हैं। तुम उस जहन्नम में
وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ
दाखिल होने वाले हो। अगर वो माबूद होते तो उस जहन्नम में दाखिल न होते।

وَكُلٌّ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝٩٩ لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّهُمۡ
और सब के सब उस में हमेशा रहेंगे। उन का उस में चिल्ला कर रोना होगा और इतना के उस में

فِيۡهَا لَا يَسۡمَعُوۡنَ ۝١٠٠ اِنَّ الَّذِيۡنَ سَبَقَتۡ لَهُمۡ مِّنَّا
कोई आवाज़ भी सुन नहीं पाएंगे। यक़ीनन वो जिन के लिए हमारी तरफ से अच्छा फैसला पेहले

الۡحُسۡنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنۡهَا مُبۡعَدُوۡنَ ۝١٠١ لَا يَسۡمَعُوۡنَ
हो चुका है, तो ये जहन्नम से दूर रखे जाएंगे। वो जहन्नम की आहट भी नहीं सुन

حَسِيۡسَهَا ۚ وَهُمۡ فِىۡ مَا اشۡتَهَتۡ اَنۡفُسُهُمۡ خٰلِدُوۡنَ ۝١٠٢
सकेंगे। और वो उन नेअमतों में जो उन के जी चाहेंगे हमेशा रहेंगे।

لَا يَحۡزُنُهُمُ الۡفَزَعُ الۡاَكۡبَرُ وَ تَتَلَقّٰهُمُ
उन को बड़ी घबराहट ग़मगीन नहीं करेगी और फरिशते उन का

الۡمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوۡمُكُمُ الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ۝١٠٣
इस्तिक़बाल करेंगे। (ये केहते हुए) के ये वो दिन है जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा था।

يَوۡمَ نَطۡوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلۡكُتُبِ ؕ
जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे लिखे हुए काग़ज़ात दफतर में लपेटने की तरह। जैसा के हम ने पेहली

كَمَا بَدَاۡنَاۤ اَوَّلَ خَلۡقٍ نُّعِيۡدُهٗ ؕ وَعۡدًا عَلَيۡنَا ؕ اِنَّا كُنَّا
दफा मखलूक़ पैदा की तो हम दोबारा उस को पैदा करेंगे। ये हम पर वादे के तौर पर लाज़िम है। यक़ीनन हम

فٰعِلِيۡنَ ۝١٠٤ وَلَقَدۡ كَتَبۡنَا فِى الزَّبُوۡرِ مِنۡۢ بَعۡدِ الذِّكۡرِ
ऐसा करने वाले हैं। यक़ीनन हम ने ज़बूर में ज़िक्र के बाद ये बात लिख दी है

اَنَّ الۡاَرۡضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوۡنَ ۝١٠٥ اِنَّ
के ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। यक़ीनन

فِىۡ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوۡمٍ عٰبِدِيۡنَ ۝١٠٦ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ
इस में इबादतगुज़ार क़ौम का मतलब पूरा पूरा है। और आप को जो हम ने भेजा तो तमाम

اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝١٠٧ قُلۡ اِنَّمَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ
जहानों के लिए रहमत बना कर ही भेजा है। आप फ़रमा दीजिए मेरी तरफ तो यही वही आती है के

اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ۝١٠٨
तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, क्या अब तुम मानते हो?

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ

फिर अगर वो ऐराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो तुम्हें पूरी खबर दे दी।

وَاِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ

और मैं नहीं जानता के वो क़रीब है या दूर है जिस का तुम से वादा किया जा रहा है। यक़ीनन वो

يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

अल्लाह बातों में से ज़ोर से कही हुई बात भी जानता है और जानता है जो तुम छुपाते हो।

وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَ مَتَاعٌ

और मैं नहीं जानता, शायद ये तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक वक़्त तक नफा

اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ

पहोंचाना हो। पैग़म्बर ने कहा के ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला कर दे। और हमारे रब रहमान तआला

الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع

ही से मदद चाहते हैं उन बातों पर जो तुम बयान करते हो। الربع

اٰيَاتُهَا ٧٨ ‏ (٢٢) سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٣) ‏ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

उस में ७८ आयतें हैं ‏ सूरह हज मदीना में नाज़िल हुई ‏ और १० रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ

ऐ इन्सानो! तुम अपने रब से डरो। यक़ीनन क़यामत का ज़लज़ला

شَیْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ

बड़ी भारी चीज़ है। जिस दिन तुम उस को देखोगे तो हर दूध पिलाने वाली औरत

عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا

अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर हमल वाली गिरा देगी अपने हमल को

وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى

और तू इन्सानों को नशे में देखेगा हालांके वो नशे में नहीं होंगे

وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ

लेकिन अल्लाह का अज़ाब ही सख्त होगा। और कुछ लोग वो हैं जो जाने

فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ٣

बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे चलते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

जिस की निसबत ये लिख दिया गया है के जो उस से दोस्ती रखेगा तो वो उसे गुमराह कर देगा

وَ يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ

और जहन्नम के अज़ाब की तरफ उस की रहनुमाई करेगा। ऐ इन्सानो!

اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

अगर तुम शक में हो दोबारा ज़िन्दा किए जाने की तरफ से, तो यक़ीनन हम ने तुम्हें पेहले पैदा किया

مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ

मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त के लोथड़े

مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ

से जिस में सूरत बनाई जाती है और (कभी) सूरत नहीं बनाई जाती, ताके हम तुम्हारे लिए बयान करें।

وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى

और हम बच्चादानी में ठेहराते हैं जो हम चाहते हैं वक़्ते मुक़र्ररा तक,

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ

फिर हम तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो।

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ

और तुम में से बाज़ की रूह कब्ज़ कर ली जाती है और तुम में से बाज़ लौटाए जाते हैं

اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ

निकम्मी उम्र की तरफ ताके वो बहोत कुछ जानने के बाद कुछ भी न जानें।

وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

और तू ज़मीन को खुश्क देखता है, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ

हैं तो हिलने और उभरने लगती है और हर खुशनुमा जोड़े को

بَهِيْجٍ ٥ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ

उगाती है। ये इस वजह से के अल्लाह हक़ है और वही मुर्दों को

الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ
ज़िन्दा करेगा और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। और ये के क़यामत

اٰتِیَةٌ لَّا رَیْبَ فِیْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ یَبْعَثُ مَنْ
आने वाली है उस में कोई शक ही नहीं, और ये के अल्लाह ज़िन्दा कर के उठाएगा उन को भी

فِی الْقُبُوْرِ ﴿۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ
जो क़बरों में हैं। और लोगों में से वो है जो झगड़ा करता है अल्लाह के बारे में

بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًی وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ۙ﴿۸﴾ ثَانِیَ
जाने बग़ैर और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर। अपना पेहलू

عِطْفِهٖ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِی الدُّنْیَا
मोड़ कर ताके अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। और उस के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में

خِزْیٌ وَّ نُذِیْقُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۹﴾
रूस्वाई है और हम उसे क़यामत के दिन आग का अज़ाब चखाएंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ یَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ
(कहा जाएगा के) ये उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी

لِّلْعَبِیْدِ ﴿۱۰﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّعْبُدُ اللّٰهَ ع ٨
ज़ुल्म नहीं करता। और इन्सानों में से वो शख्स भी है जो अल्लाह की इबादत करता है

عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَیْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ
किनारे पर। फिर अगर उसे भलाई पहोंचे तो उस से मुतमइन हो जाता है।

وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ۫ خَسِرَ الدُّنْیَا
और अगर उसे आज़माइश पहोंचे तो मुंह फेर कर पलट जाता है। दुन्या और आख़िरत में

وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۱﴾ یَدْعُوْا
उस ने खसारा उठाया। यही सरीह घाटा है। वो अल्लाह

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَضُرُّهٗ وَمَا لَا یَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ
के सिवा पुकारता है ऐसी चीज़ को जो उसे न ज़रर पहोंचा सकती है और न नफ़ा दे सकती है। यही

هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِیْدُ ۚ﴿۱۲﴾ یَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ
है परले दरजे की गुमराही। वो पुकारता है उस को जिस का ज़रर उस के नफे से ज़्यादा

مِنۡ نَّفۡعِهٖ ؕ لَبِئۡسَ الۡمَوۡلٰى وَلَبِئۡسَ الۡعَشِيۡرُ ۝١٣
क़रीब है। अलबत्ता बहोत बुरा दोस्त है और बहोत बुरा साथी है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों को और जो नेक काम करते रहे उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा

تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفۡعَلُ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। यक़ीनन अल्लाह करता है

مَا يُرِيۡدُ ۝١٤ مَنۡ كَانَ يَظُنُّ اَنۡ لَّنۡ يَّنۡصُرَهُ اللّٰهُ
वही जिस का वो इरादा करता है। जो ये समझता है के अल्लाह इस नबी की हरगिज़ नुसरत नहीं करेगा

فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ فَلۡيَمۡدُدۡ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ
दुन्या और आखिरत में तो उसे चाहिए के एक रस्सी लम्बी कर ले आसमान तक,

ثُمَّ لۡيَقۡطَعۡ فَلۡيَنۡظُرۡ هَلۡ يُذۡهِبَنَّ كَيۡدُهٗ مَا يَغِيۡظُ ۝١٥
फिर उसे काट दे, फिर देखे के क्या उस की ये तदबीर उस को खत्म कर देती है जो उसे गुस्सा दिलाती है?

وَكَذٰلِكَ اَنۡزَلۡنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهۡدِىۡ
और इसी तरह हम ने कुरआन को रोशन आयतें बना कर उतारा, और ये के अल्लाह हिदायत देता है

مَنۡ يُّرِيۡدُ ۝١٦ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِيۡنَ هَادُوۡا
उसी को जिसे वो चाहता है। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी

وَالصّٰبِـِٕيۡنَ وَالنَّصٰرٰى وَالۡمَجُوۡسَ وَالَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡٓا ۖ
और साबी और नसारा और आतिशपरस्त हैं और जो मुशरिक हैं।

اِنَّ اللّٰهَ يَفۡصِلُ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
यक़ीनन अल्लाह उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा। यक़ीनन अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ۝١٧ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسۡجُدُ
हर चीज़ को देख रहा है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह को सजदा करते हैं वो

لَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ وَالشَّمۡسُ
जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और सूरज

وَالۡقَمَرُ وَالنُّجُوۡمُ وَالۡجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ
और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और जानवर भी

وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ

और बहोत से इन्सान भी। और बहोत सों पर अज़ाब साबित हो चुका है।

وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ

और जिसे अल्लाह रूस्वा कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त दे नहीं सकता। यक़ीनन अल्लाह करता है

مَا يَشَآءُ ۩ ﴿١٨﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ز السجدة ٦

वही जो वो चाहता है। ये दो मुद्दई हैं जिन्हों ने अपने रब के बारे में झगड़ा किया।

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ

फिर जो काफिर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे।

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ

उन के सरों के ऊपर से गर्म पानी डाला जाएगा। जिस से गल

بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ

जाएगा जो उन के पेट में है और खालें भी। और उन के लिए लोहे के

مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا

गुर्ज़ तय्यार हैं। जब वो जहन्नम से ग़म के मारे निकलने का इरादा

مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ق وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ١٢ ٩

करेंगे तो उन्हें दोबारा उस में लौटा दिया जाएगा। और कहा जाएगा के आग का अज़ाब चखो।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

यक़ीनन अल्लाह दाखिल करेगा उन को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا

ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, उन में उन्हें

مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ؕ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا

सौने के कंगन पेहनाए जाएंगे और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास उन में

حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا

रेशम का होगा। और उन्हें हिदायत दी गई है कलिमात में से सब से उम्दा कलिमे की (ला इलाहा इल्लल्लाह की)।

اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और उन्हें हिदायत दी गई है क़ाबिले तारीफ़ अल्लाह के रास्ते की। यक़ीनन जो काफ़िर हैं

وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
और अल्लाह के रास्ते से और उस मस्जिदे हराम से रोकते हैं

الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ
जो हम ने तमाम लोगों के लिए बनाई है के बराबर है उस में वहां का रेहने वाला

وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ
और बाहर से आने वाला। और जो उस में शरारत से बेदीनी का इरादा करेगा तो हम उसे

٣ ع ٣/١٠ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ
दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे। और जब हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को तय्यार कर के दी

الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ
बैतुल्लाह की जगह के मेरे साथ किसी चीज़ को तुम शरीक न ठेहराओ और मेरे घर को पाक करो

لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾
तवाफ करने वालों और क़याम और रूकूअ और सजदा करने वालों के लिए।

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا
और आप ऐलान कर दीजिए इन्सानों में हज का तो वो आप के पास आएंगे पैदल

وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾
और हर दुबली ऊँटनी पर (सवार हो कर) आएंगे जो दूर दराज़ इलाक़ों से आ रही होंगी।

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ
ताके वो अपने मनाफेअ के लिए हाज़िर हो जाएं और अल्लाह का नाम लें

فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ ۢ بَهِيْمَةِ
मखसूस दिनों में उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी के तौर पर

الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾
दिए हैं। तो तुम उस से खाओ और मोहताज फक़ीर को खिलाओ।

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا
फिर उन्हें चाहिए के अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और पुराने

بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ
घर का वो तवाफ करें। ये हुक्म तो है। और जो अल्लाह की इज्ज़त दी हुई चीज़ों की

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ

ताज़ीम करेगा तो ये उस के लिए बेहतर है उस के रब के नज़दीक। और तुम्हारे लिए चौपाए

الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ

हलाल किए गए हैं मगर वो जो तुम पर तिलावत किए जाते हैं, इस लिए तुम बुतों की

مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ﴿۳۰﴾ حُنَفَآءَ

गन्दगी से बचो और झूठ बोलने से बचो। एक अल्लाह के

لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

हो कर रहो, उस के साथ शरीक न करने वाले बनो। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा

فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ

तो गोया वो आसमान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं

اَوْ تَهْوِىْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ ذٰلِكَ ۗ

या तूफ़ानी हवा किसी दूर जगह में उसे फैंक रही है। ये हुक्म तो है।

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾

और जो अल्लाह की तरफ से मिले अफ़आले हज की ताज़ीम करेगा तो यक़ीनन ये दिलों के तक़्वे से है।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ

तुम्हारे लिए उन चौपाओं में एक वक़्ते मुक़र्ररा तक नफा उठाना है, फिर उन के ज़बह की जगह

اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا ٤ ع٨ ١١

पुराने घर के पास है। और हर उम्मत के लिए हम ने क़ुरबानी का एक तरीक़ा बनाया है

لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ

ताके वो अल्लाह का नाम लें उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें खाने के

الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ

लिए दिए। फिर तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो तुम उसी के फरमांबरदार बनो।

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ

और आप बशारत सुना दीजिए उन आजिज़ी करने वालों को, के जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है

وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ

तो उन के दिल डर जाते हैं और मसाइब पर सब्र करने वालों को

وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣٥

और नमाज़ क़ाइम करने वालों को। और उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी वो खर्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ

और हदी के जानवरों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह के शआइर में से बनाया है तुम्हारे लिए

فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ

उन में भलाई है। फिर तुम उन पर अल्लाह का नाम लो उन को खड़ा कर के।

فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا

फिर जब उन के पेहलू ज़मीन पर गिर पड़ें तो तुम उन में से खाओ और तुम न मांगने वालों

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۭ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ

और मांगने वालों को खिलाओ। इसी तरह हम ने मुसख्खर किया है उन जानवरों को तुम्हारे लिए

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٦ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا

ताके तुम शुक्र अदा करो। अल्लाह को न उन का गोश्त हरगिज़ पहोंचता है

وَلَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۭ

न खून, लेकिन अल्लाह को तुम्हारा तक़्वा पहोंचता है।

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى

इसी तरह हम ने उन जानवरों पर तुम्हें क़ाबू दिया ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह

مَا هَدٰىكُمْ ۭ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٧ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ

ने तुम्हें हिदायत दी। और बशारत सुना दीजिए नेकी करने वालों को। यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों की

عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ

तरफ से मुदाफअत करता है। यक़ीनन अल्लाह हर ख़यानत करने वाले नाशुकरे से महब्बत

الثلث ٥ ع ٥ ١٢ كَفُوْرٍ ۝٣٨ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ

नहीं करता। उन लोगों के लिए जिन से किताल किया जाता है उन को इजाज़त दी गई है इस वजह से के वो मज़लूम

وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝٣٩ ۙ الَّذِيْنَ

हैं। और ये के यक़ीनन अल्लाह उन की नुसरत पर कुदरत रखने वाला है। उन लोगों की

اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

जिन्हें अपने घरों से नाहक़ निकाल दिया गया सिर्फ इस लिए के उन्हों ने कहा

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوۡلَا دَفۡعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعۡضَهُمۡ

के हमारा रब अल्लाह है। और अगर अल्लाह का इन्सानों को उन में से एक को दूसरे के ज़रिए दफ़ा करना न होता

بِبَعۡضٍ لَّهُدِّمَتۡ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ

तो अल्बत्ता मुन्हदिम कर दी जाती राहिबों की खलवतगाहें और नसारा की इबादतगाहें और यहूदियों की

وَّ مَسٰجِدُ يُذۡكَرُ فِيۡهَا اسۡمُ اللّٰهِ كَثِيۡرًا ؕ

इबादतगाहें और वो मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम बहोत ज़्यादा लिया जाता है।

وَ لَيَنۡصُرَنَّ اللّٰهُ مَنۡ يَّنۡصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِىٌّ

और ज़रूर अल्लाह उस की नुसरत करेगा जो अल्लाह की नुसरत करेगा। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला,

عَزِيۡزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيۡنَ اِنۡ مَّكَّنّٰهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ

इज़्ज़त वाला है। वो लोग ऐसे हैं के अगर हम उन्हें ज़मीन में हुकूमत दें

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوۡا

तो वो नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और अम्र

بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَهَوۡا عَنِ الۡمُنۡكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

बिल मारूफ और नही अनिल मुन्कर करें। और अल्लाह के इखतियार में तमाम उमूर

الۡاُمُوۡرِ ﴿٤١﴾ وَاِنۡ يُّكَذِّبُوۡكَ فَقَدۡ كَذَّبَتۡ

का अन्जाम है। और अगर वो आप को झुठलाएं तो यक़ीनन उन से

قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوۡدُ ۙ ﴿٤٢﴾ وَقَوۡمُ

पेहले क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौमे समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِبۡرٰهِيۡمَ وَ قَوۡمُ لُوۡطٍ ۙ ﴿٤٣﴾ وَّاَصۡحٰبُ مَدۡيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

की क़ौम और क़ौमे लूत और मदयन वाले भी झुठला चुके हैं। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوۡسٰى فَاَمۡلَيۡتُ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ثُمَّ اَخَذۡتُهُمۡ ۚ

की तकज़ीब की गई, फिर मैं ने काफिरों को मुहलत दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया।

فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ

फिर मेरी पकड़ कैसी रही? फिर बहोत सी बस्तियाँ हैं

اَهۡلَكۡنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

जिन को हम ने हलाक किया इस हाल में के वो ज़ालिम थीं, फिर अब वो अपनी छतों पर

عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾
और बेकार पड़े कुवें पर और ऊंचे पक्के महल पर गिरी पड़ी हैं।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ
क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के उन के पास दिल होते

يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا فَاِنَّهَا
जिन से वो समझते या कान होते जिन से वो सुनते? इस लिए के

لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ
आँखें अन्धी नहीं हुवा करतीं, लेकिन वो दिल अन्धे हो जाया करते हैं जो

فِى الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ
सीनों में हैं। और ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं

وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ
और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ हरगिज़ नहीं करेगा। और यक़ीनन एक दिन तेरे रब

رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ كَاَيِّنْ
के यहाँ का तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल के बराबर है। और कितनी

مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
बस्तियाँ हैं जिन को मैं ने मुहलत दी और वो ज़ालिम थीं, फिर

اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَىَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا
मैं ने उन को पकड़ लिया। और मेरी तरफ लौटना है। और फ़रमा दीजिए ऐ

النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ
लोगो! मैं तो सिर्फ तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। फिर जो

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली

كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِىْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
रोज़ी है। और जो हमारी आयतों के बारे में कोशिश करेंगे मुक़ाबला करने की

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ
तो ये दोज़खी हैं। और हम ने आप से पेहले

قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِىٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلۡقَى
कोई रसूल और नबी नहीं भेजे मगर जब उन्हों ने क़िराअत की तो शैतान ने

الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى
उन की क़िराअत में (खलल) डाला। फिर अल्लाह मन्सूख कर देता है शैतान के डाले

الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ
हुए को और अल्लाह अपनी आयतों को मुहकम रखता है। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत

حَكِيۡمٌ ۙ﴿۵۲﴾ لِّيَجۡعَلَ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ فِتۡنَةً
वाले हैं। ताके अल्लाह शैतान के डाले हुए को आज़माइश बनाएं

لِّلَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡقَاسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ
उन के लिए जिन के दिलों में बीमारी है और उन के लिए जिन के दिल सख्त हैं।

وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَفِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ۙ﴿۵۳﴾ وَّلِيَعۡلَمَ
और यक़ीनन ये ज़ालिम अलबत्ता लम्बी मुखालफत में हैं। और ताके

الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ اَنَّهُ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ
वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो जान लें के ये हक़ है आप के रब की तरफ से,

فَيُؤۡمِنُوۡا بِهٖ فَتُخۡبِتَ لَهٗ قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ
फिर वो उस पर ईमान लाएं, फिर उन के दिल उस के सामने झुक जाएं। और यक़ीनन अल्लाह

لَهَادِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۵۴﴾
ज़रूर सीधी राह की हिदायत देगा उन लोगों को जो ईमान लाए।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ
और काफिर तो उस की तरफ से हमेशा शक ही में रहेंगे

حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً اَوۡ يَاۡتِيَهُمۡ عَذَابُ
यहां तक के क़यामत अचानक आ जाए या उन के पास मनहूस

يَوۡمٍ عَقِيۡمٍ ﴿۵۵﴾ اَلۡمُلۡكُ يَوۡمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحۡكُمُ
दिन का अज़ाब आ जाए। सल्तनत उस दिन अल्लाह के लिए ही होगी। अल्लाह उन के दरमियान

بَيۡنَهُمۡ ؕ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىۡ
फेसला करेगा। फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

जन्नाते नईम में होंगे। और जो काफिर हैं, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيْنَ ع ۹/۱۴

उन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जिन्हों ने

هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا

हिजरत की अल्लाह के रास्ते में, फिर वो क़त्ल किए गए या अपनी मौत मर गए

لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

तो ज़रूर अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी देगा। और यक़ीनन अल्लाह बेहतरीन

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۵۸﴾ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ

रोज़ी देने वाला है। अल्लाह ज़रूर उन्हें दाखिल करेगा ऐसी जगह में जिस को वो पसन्द करेंगे।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ

और यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये तो हुवा। और जो

عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ

बदला ले उसी क़दर जो उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़्यादती की गई तो अल्लाह

لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿۶۰﴾ ذٰلِكَ

ज़रूर उस की नुसरत करेगा। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला, बख्शने वाला है। ये इस वजह

بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

से के अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۶۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

दाखिल करता है और ये के अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ये इस वजह से के

اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ

अल्लाह ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिस को ये काफिर पुकारते हैं वो

الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۶۲﴾

बातिल है और ये के अल्लाह वो बरतर है, बड़ा है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ

क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा? फिर ज़मीन

الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۶۳﴾ لَهٗ

सरसब्ज़ हो गई। यक़ीनन अल्लाह महरबान है, बाखबर है। उस की मिल्क हैं

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और ये के अल्लाह

الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۶۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ ع ٩ ١٥

बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने तुम्हारे ताबेअ कर दी

مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ

वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं और कशती जो चलती है समन्दर में अल्लाह के हुक्म से?

وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ

और अल्लाह आसमान को थामे हुए है इस से के वो ज़मीन पर गिर जाए

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۵﴾

मगर अल्लाह के हुक्म से (एक दिन गिर जाएगा)। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर बहोत ज़्यादा शफीक़ है, महरबान है।

وَهُوَ الَّذِىْٓ اَحْيَاكُمْ ز ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ

और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿۶۶﴾ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا

यक़ीनन इन्सान अलबत्ता नाशुकरा है। हर उम्मत के लिए हम ने एक इबादत का तरीक़ा मुक़र्रर किया है

مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ

जिस के मुताबिक़ वो इबादत करते हैं, इस लिए ये आप से झगड़ा न करें इस मुआमले में

وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۶۷﴾

और अपने रब की तरफ़ बुलाते रहिए। यक़ीनन आप ज़रूर हिदायत और सीधे रास्ते पर हैं।

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۸﴾

और अगर ये आप से बहस करें तो आप केह दीजिए के अल्लाह तुम्हारे आमाल खूब जानता है।

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा जिस में तुम इखतिलाफ

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى

कर रहे हो। क्या तुझे मालूम नहीं के अल्लाह जानता है वो चीज़ें जो

السَّمَآءِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىۡ كِتٰبٍ ؕ
आसमान और ज़मीन में हैं? बेशक ये सब कुछ लौहे महफ़ूज़ में है।

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ۝٧٠ وَ يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ
यक़ीनन ये अल्लाह पर आसान है। और ये अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं

اللّٰهِ مَا لَمۡ يُنَزِّلۡ بِهٖ سُلۡطٰنًا وَّمَا لَيۡسَ لَهُمۡ
ऐसी चीज़ की जिस पर अल्लाह ने कोई हुज्जत नहीं उतारी और उन के पास इस की कोई

بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ مِنۡ نَّصِيۡرٍ ۝٧١ وَاِذَا تُتۡلٰى
दलील भी नहीं। और उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा। और जब उन पर हमारी साफ साफ

عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعۡرِفُ فِىۡ وُجُوۡهِ الَّذِيۡنَ
आयतें तिलावत की जाती हैं तो आप काफिरों के चेहरों में

كَفَرُوا الۡمُنۡكَرَ ؕ يَكَادُوۡنَ يَسۡطُوۡنَ بِالَّذِيۡنَ
इन्कार देख सकोगे। क़रीब है के ये हमला कर दें उन पर जो

يَتۡلُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ؕ قُلۡ اَفَاُنَبِّئُكُمۡ بِشَرٍّ
उन पर हमारी आयतें तिलावत करते हैं। आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से बुरी

مِّنۡ ذٰلِكُمۡ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ
चीज़ की खबर दूँ? वो दोज़ख है, जिस का अल्लाह ने काफिरों से वादा किया है।

ع وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۝٧٢ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
और वो बुरी जगह है। ऐ इन्सानो! एक मिसाल बयान की गई है,

فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ
तुम उस को ग़ौर से सुनो। यक़ीनन वो जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते

اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّلَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ ؕ
हो वो एक मक्खी भी हरगिज़ पैदा नहीं कर सकते अगर्चे वो सब उस के लिए इकट्ठे हो जाएं।

وَاِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَيۡـًٔا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ
और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन कर ले जाए तो मक्खी से वो चीज़ ये छुड़ा

مِنۡهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ ۝٧٣ مَا قَدَرُوا
नहीं सकते। तालिब भी कमज़ोर और मतलूब भी। अल्लाह की उन्हों ने क़दर

اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیۡزٌ ﴿۷۴﴾ اَللّٰهُ
नहीं की जैसा के अल्लाह की क़दर का हक़ है। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला, इज़्ज़त वाला है। अल्लाह
یَصۡطَفِیۡ مِنَ الۡمَلٰٓئِکَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ
मुन्तख़ब करता है फ़रिशतों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहोंचाने वाले।
اِنَّ اللّٰهَ سَمِیۡعٌۢ بَصِیۡرٌ ﴿۷۵﴾ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ
यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। अल्लाह जानता है वो चीज़ें जो उन के आगे
وَمَا خَلۡفَهُمۡ ؕ وَاِلَی اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۷۶﴾
और उन के पीछे हैं। और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।
یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا ارۡکَعُوۡا وَاسۡجُدُوۡا وَاعۡبُدُوۡا
ऐ ईमान वालो! रूकूअ करो और सज्दा करो और इबादत करो
رَبَّکُمۡ وَافۡعَلُوا الۡخَیۡرَ لَعَلَّکُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ﴿۷۷﴾ وَجَاهِدُوۡا
अपने रब की और नेकी के काम करो ताके तुम फलाह पाओ। और मुजाहदा करो
فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجۡتَبٰىکُمۡ وَمَا جَعَلَ
अल्लाह के रास्ते में जैसा उस में मेहनत का हक़ है। उस ने तुम्हें मुन्तखब किया और उस ने
عَلَیۡکُمۡ فِی الدِّیۡنِ مِنۡ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِیۡکُمۡ
दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम अपने बाप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का
اِبۡرٰهِیۡمَ ؕ هُوَ سَمّٰىکُمُ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ۙ۬ مِنۡ قَبۡلُ
इत्तिबा करो। उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस से पेहले
وَفِیۡ هٰذَا لِیَکُوۡنَ الرَّسُوۡلُ شَهِیۡدًا عَلَیۡکُمۡ
और इस कुरआन में भी ताके रसूल तुम पर गवाह रहें
وَ تَکُوۡنُوۡا شُهَدَآءَ عَلَی النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیۡمُوا
और तुम गवाह रहो लोगों पर। और नमाज़ क़ाइम
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّکٰوةَ وَاعۡتَصِمُوۡا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ
करो और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामे रहो। वो
مَوۡلٰىکُمۡ ۚ فَنِعۡمَ الۡمَوۡلٰی وَنِعۡمَ النَّصِیۡرُ ﴿۷۸﴾
तुम्हारा मालिक है। फिर वो कितना अच्छा मालिक है, और कितना अच्छा मददगार है।

السجدة عند الامام الشافعی رحمه الله تعالیٰ ۱۲

ع ۱۰